

21वीं सदी की प्रमुख वैशिक समस्याएँ तथा भारतीय दृष्टिकोण: एक विशेषणात्मक अध्ययन

Dr. Kashmir Singh¹

Assistant Professor in Political Science,
Pt. N.R.S. Govt. College,
Rohtak, Haryana, India.

Dr. Rajni Kumari²

Assistant Professor in Political Science,
Sh. L.N. Hindu College,
Rohtak, Haryana, India.

DOI: <https://doi.org/10.61165/sk.publisher.v12i9.7>

शोधालेख-सार: 21वीं सदी वैशिक परिवृश्य में तेजी से बदलाव की सदी के रूप में उभर रही है। तकनीकी विकास, वैश्वीकरण, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और पर्यावरणीय चुनौतियों के बीच भारत को अनेक जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ जनसंख्या, भौगोलिक विविधता, संसाधनों की उपलब्धता, राजनीतिक संरचना और सांस्कृतिक विविधता सभी मिलकर उसके विकास और वैशिक भूमिका को प्रभावित करते हैं। इस सदी में भारत की समस्याएँ केवल आंतरिक स्तर तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वैशिक संदर्भ में भी उनके प्रभाव को समझना आवश्यक है। वैशिक स्तर पर राजनीतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय निर्णयों के कारण भारत को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। यही कारण है कि इस शोध का उद्देश्य भारत की समस्याओं का व्यापक विशेषण प्रस्तुत करना है और उनके सम्भावित समाधान पर चर्चा करना है। भारत, अपनी विशाल जनसंख्या, विविध भौगोलिक संरचना और तेजी से बढ़ती औद्योगिकरण प्रक्रिया के कारण पर्यावरणीय संकट का सामना कर रहा है। 21वीं सदी में पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास भारत के लिए अत्यंत आवश्यक हो गया है। इस शोध पत्र में वर्तमान वैशिक समस्याओं के संदर्भ में भारतीय दृष्टिकोण का सटीक व सारगमित विशेषण किया गया है।

मूलशब्द: वैशिक चुनौतियाँ, तकनीकी विकास, पर्यावरणीयसंकट, भू-राजनीतिक, रणनीतिक सहयोग, कूटनीतिक चुनौतियाँ, राजनीतिक अस्थिरता

भूमिका:-

21वीं सदी में भारत का वैशिक महत्व लगातार बढ़ रहा है। आर्थिक वृद्धि, तकनीकी नवाचार, वैशिक व्यापार में भागीदारी और रणनीतिक सहयोग के माध्यम से भारत ने अपनी पहचान बनाई है। इसके बावजूद पर्यावरणीय संकट, जलवायु परिवर्तन और राजनीतिक अस्थिरता जैसी चुनौतियाँ उसके विकास को प्रभावित कर रही हैं। भारत का भू-राजनीतिक महत्व भी लगातार बढ़ रहा है। दक्षिण एशिया

और उससे जुड़े क्षेत्रों में उसकी भूमिका, वैश्विक संगठन जैसे कि संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन (WTO), BRICS और G20 में सक्रिय भागीदारी, उसे वैश्विक मंच पर एक प्रमुख खिलाड़ी बनाती हैं।

1.1. शोध का महत्व-

भारत एक तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्था है। उसकी भौगोलिक स्थिति, विशाल जनसंख्या और संसाधनों की विविधता उसे वैश्विक परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण बनाती है। इसके बावजूद भारत को कई गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इन समस्याओं का अध्ययन करना न केवल राष्ट्रीय स्तर पर, बल्कि अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भी महत्वपूर्ण है। शोध का यह प्रयास भारत की समस्याओं का वैज्ञानिक और गहन विश्लेषण प्रस्तुत करेगा। इनमें प्रमुख हैं:-

- पर्यावरणीय और जलवायु संबंधी चुनौतियाँ:-** औद्योगीकरण, शहरीकरण और बढ़ती जनसंख्या ने प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक दबाव डाल दिया है।
- राजनीतिक और कूटनीतिक समस्याएँ:-** लोकतंत्र की जटिलताएँ, आंतरिक सुरक्षा और पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में तनाव।
- सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ:-** गरीबी, बेरोजगारी और शिक्षा में असमानता।

1.2. शोध के उद्देश्य-

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:-

- भारत की पर्यावरणीय और जलवायु संबंधी समस्याओं का विश्लेषण।
- भारत की राजनीतिक और कूटनीतिक चुनौतियों का अध्ययन।
- भारत की समस्याओं के वैश्विक प्रभाव और समाधान का आकलन।

इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट होगा कि भारत न केवल आंतरिक रूप से, बल्कि वैश्विक संदर्भ में भी किस प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहा है और उनकी प्रभावी निवारण की दिशा में क्या कदम उठाए जा सकते हैं।

2. भारतीय संदर्भ में वैश्विक चुनौतियाँ

भारत की चुनौतियाँ केवल आंतरिक स्तर तक सीमित नहीं हैं। वैश्विक परिवर्तन में पर्यावरणीय संकट, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक राजनीति और अंतरराष्ट्रीय आर्थिक दबाव उसकी नीतियों और विकास को प्रभावित करते हैं:-

- जलवायु परिवर्तन का प्रभाव:-** ग्लोबल वार्मिंग और अत्यधिक मौसम की घटनाएँ कृषि, जल संसाधन और स्वास्थ्य पर प्रभाव डालती हैं।
- वैश्विक राजनीतिक दबाव:-** पड़ोसी देशों और बड़े वैश्विक शक्तियों के साथ संबंध भारत की सुरक्षा और विकास रणनीतियों को प्रभावित करते हैं।
- आर्थिक वैश्वीकरण:-** वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा और तकनीकी नवाचार भारत की आर्थिक नीतियों और रोजगार पर असर डालते हैं।

2.1. भारत की पर्यावरणीय चुनौतियाँ-

भारत की आर्थिक प्रगति के लिए औद्योगिकीकरण आवश्यक है, परन्तु इसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक दबाव पड़ता है:-

- वायु प्रदूषण:-** बढ़ती कारखानों, वाहनों और उद्योगों के कारण वायु में हानिकारक गैसों की मात्रा बढ़ रही है। दिल्ली, कोलकाता और मुंबई जैसी महानगरों में वायु गुणवत्ता अत्यधिक खराब है।
- जल प्रदूषण:-** नदियों और जलस्रोतों में औद्योगिक अपशिष्ट, रासायनिक पदार्थ और गंदगी का मिश्रण बढ़ रहा है। गंगा और यमुना नदी में प्रदूषण के कारण जैव विविधता पर गंभीर प्रभाव पड़ा है।
- ध्वनि और मृदा प्रदूषण:-** शहरीकरण और औद्योगिक गतिविधियों के कारण ध्वनि प्रदूषण और मृदा की ठर्वरता में कमी आई है।

2.2. पर्यावरणीय नीतियाँ और सरकारी पहल-

भारत सरकार ने कई नीतियाँ और पहल शुरू की हैं, जैसे:-

- राष्ट्रीय हरित योजना:-** वनों की कटाई को रोकने और हरित क्षेत्र बढ़ाने के लिए।
- जल संसाधन प्रबंधन:-** नदी संरक्षण और जल पुनर्चक्रण योजनाएँ।
- स्वच्छ भारत अभियान:-** स्वच्छता और कचरा प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए।
- वायु और जल प्रदूषण नियंत्रण कानून:-** प्रदूषण की निगरानी और दंडात्मक उपाय।

2.3. समाधान और सुधार-

पर्यावरणीय संकट को कम करने के लिए भारत में निम्नलिखित कदम आवश्यक हैं:-

- सतत विकास की नीति:-** आर्थिक विकास और पर्यावरणीय संरक्षण का संतुलन।
- हरित ऊर्जा और तकनीकी नवाचार:-** सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जैव ईंधन का उपयोग।
- जनजागरूकता और शिक्षा:-** लोगों को पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूक करना।
- सख्त कानून और निगरानी:-** प्रदूषण नियंत्रण और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए।

3. वैश्विक जलवायु परिवर्तन और भारत

वर्तमान समय में धरती के औसत तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है। विश्व में बढ़ते औद्योगिकीकरण, जीवाश्म ईंधन का अत्यधिक उपयोग, वनों की कटाई और प्रदूषण ने ग्रीनहाउस गैसों का स्तर बढ़ा दिया है। इन गैसों में प्रमुख हैं: कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2), मीथेन (CH_4), नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O)। इन गैसों के बढ़ते स्तर से ग्रीनहाउस प्रभाव बढ़ा है, जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक तापमान में वृद्धि और चरम मौसम की घटनाओं में बढ़ोतारी हुई है। इसलिये जलवायु परिवर्तन वर्तमान समय की सबसे गंभीर वैश्विक चुनौतियों में से एक है। वैश्विक तापमान में वृद्धि, चरम मौसम की घटनाएँ, समुद्र स्तर का बढ़ना और ग्लेशियरों का पिघलना, सभी देशों के लिए गंभीर प्रभाव पैदा कर रहे हैं। भारत, अपनी भौगोलिक विविधता, विशाल जनसंख्या और आर्थिक विकास की गति के कारण, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से

गहरे प्रभावित हो रहा है। जलवायु परिवर्तन न केवल पर्यावरणीय, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से भी भारत के लिए चुनौतीपूर्ण है। भारत सरकार ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए कई योजनाएँ और नीतियाँ बनाई हैं:-

- राष्ट्रीय कार्य योजना – जलवायु परिवर्तन (NAPCC)।
- नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता और हरित क्षेत्र वृद्धि।
- सौर ऊर्जा और अक्षय ऊर्जा पहल।
- सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और बायोमास का उपयोग।
- जल संरक्षण और प्रबंधन योजनाएँ।
- जल पुनर्चक्रण, तालाबों और नदियों की सफाई।
- शहरी और ग्रामीण क्षेत्र की सतत विकास योजनाएँ।
- स्मार्ट सिटी परियोजनाएँ, ग्रीन बिल्डिंग और सार्वजनिक परिवहन।

3.1. अंतरराष्ट्रीय जलवायु समझौते और भारत-

भारत ने कई अंतरराष्ट्रीय समझौतों और सम्मेलनों में भाग लिया है, जैसे :-

- **पेरिस समझौता (2015)** :– कार्बन उत्सर्जन कम करने के राष्ट्रीय लक्ष्य।
- **संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (UNFCCC)**: – वैश्विक सहयोग और तकनीकी सहयोग।
- **स्टर्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (SDGs)** :– जलवायु और पर्यावरणीय लक्ष्य।

भारत की भागीदारी ने वैश्विक स्तर पर उसे सक्रिय और जिम्मेदार राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत किया है।

3.2. समाधान और रणनीतियाँ-

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए भारत में निम्नलिखित कदम आवश्यक हैं:-

- **हरित ऊर्जा का उपयोग** :– सौर, पवन और बायोमास ऊर्जा में निवेश।
- **प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण** :– वनों की कटाई रोकना, जल संरक्षण।
- **जनजागरूकता और शिक्षा** :– लोगों को जलवायु संकट और सतत विकास के प्रति जागरूक करना।
- **नीति और कानून में सुधार** :– पर्यावरणीय कानूनों का कड़ाई से पालन।
- **वैश्विक सहयोग और तकनीकी साझेदारी** :– अनुसंधान और नवाचार में अंतरराष्ट्रीय सहयोग।

4. भारत की राजनीतिक चुनौतियाँ

राजनीति किसी भी राष्ट्र की प्रगति और स्थिरता का महत्वपूर्ण स्तंभ है। भारत, एक विशाल लोकतंत्र होने के नाते, राजनीतिक संरचना, नीतियाँ और शासन प्रणाली के विभिन्न आयामों से जुड़ी कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। 21वीं सदी में राजनीतिक अस्थिरता,

भ्रष्टाचार, चुनावी राजनीति, सामाजिक असमानताएँ और शासन में पारदर्शिता की कमी ने विकास को प्रभावित किया है। भारत एक बहुजातीय और बहुभाषी लोकतंत्र है। इसकी जटिलताओं में शामिल हैं:-

- विविध सामाजिक संरचना: – जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्रीय विविधता राजनीतिक निर्णयों को प्रभावित करती है।
- निर्वाचन प्रणाली की चुनौतियाँ: - चुनावी प्रक्रिया में वित्तीय और राजनीतिक दबाव का प्रभाव।
- लोकतांत्रिक संस्थाओं का संतुलन: – कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के बीच संतुलन बनाए रखना कठिन।

4.1. भ्रष्टाचार और नीति निर्माण-

भ्रष्टाचार भारत की राजनीतिक और प्रशासनिक प्रणाली में सबसे बड़ी चुनौती है:-

- सरकारी योजनाओं और नीतियों में अवैध लाभ और कुप्रबंधन।
- निर्णय लेने की प्रक्रिया में राजनीतिक दबाव।
- विकास परियोजनाओं में धन का दुरुपयोग।

4.2. चुनाव और राजनीतिक प्रणाली-

भारत की चुनावी प्रणाली लोकतांत्रिक अधिकारों को सुनिश्चित करती है, लेकिन इसके साथ कई समस्याएँ भी जुड़ी हैं:-

- चुनावी खर्च और धनबल का प्रभाव।
- राजनीतिक दलों की स्थिरता और नीति में बदलाव।
- वोटिंग पैटर्न और सामाजिक धुवीकरण।

इन समस्याओं के कारण राजनीतिक निर्णयों की गुणवत्ता और शासन की प्रभावशीलता प्रभावित होती है।

4.3. आंतरिक सुरक्षा और शासन-

राजनीतिक चुनौतियों में आंतरिक सुरक्षा का मुद्दा भी शामिल है:

- आतंकवाद और उग्रवाद के कारण स्थिरता में कमी।
- सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा संकट।
- पुलिस और सुरक्षा संस्थाओं में संसाधनों और प्रशिक्षण की कमी।

4.4. सामाजिक असमानताएँ और राजनीतिक प्रभाव-

भारत में सामाजिक असमानताएँ राजनीतिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करती हैं:-

- शिक्षा और स्वास्थ्य में असमानता।
- गरीब और वंचित वर्गों की राजनीतिक भागीदारी में कमी।
- महिला सशक्तिकरण और प्रतिनिधित्व की कमी।

सामाजिक असमानताओं के कारण राजनीतिक नीतियाँ अक्सर सभी वर्गों के लिए समान रूप से लाभकारी नहीं हो पाती हैं।

4.5. समाधान और सुधार-

राजनीतिक चुनौतियों को कम करने के लिए भारत में आवश्यक कदम:-

- **सशक्त लोकतांत्रिक संस्थाएँ**:- पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करना।
- **आषाढ़ार नियंत्रण**:- कड़े कानून और निगरानी।
- **नागरिक शिक्षा और भागीदारी**:- जनता को जागरूक और सक्रिय बनाना।
- **समान अवसर और प्रतिनिधित्व**:- सभी सामाजिक वर्गों और महिलाओं को राजनीतिक भागीदारी में शामिल करना।
- **सुरक्षा और प्रशासन में सुधार**:- आंतरिक सुरक्षा बढ़ाना और पुलिस वसेना को सशक्त करना।

5. कूटनीतिक चुनौतियाँ और भारत की विदेश नीति

भारत एक विशाल और विविधतापूर्ण देश होने के नाते, अपने कूटनीतिक संबंधों और वैश्विक भूमिका के माध्यम से विश्व राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 21वीं सदी में वैश्विक राजनीति में तीव्र बदलाव, ऊर्जा सुरक्षा, सीमा विवाद, आतंकवाद, और वैश्विक संगठनों में भागीदारी भारत की विदेश नीति को चुनौतीपूर्ण बना रहे हैं। भारत की कूटनीतिक चुनौतियों को कम करने के लिए निम्नलिखित कदम आवश्यक हैं:-

- **सशक्त और स्वतंत्र विदेश नीति**:- राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देना।
- **क्षेत्रीय सहयोग और वार्ता**:- पड़ोसी देशों के साथ स्थिर संबंध।
- **सुरक्षा और ऊर्जा रणनीति**:- आत्मनिर्भरता और रणनीतिक संसाधनों का विकास।
- **वैश्विक मंचों में सक्रियता**:- अंतरराष्ट्रीय संगठनों और सम्मेलनों में नेतृत्व।
- **तकनीकी और शैक्षणिक साझेदारी**:- विज्ञान, तकनीकी और शिक्षा के माध्यम से कूटनीतिक सहयोग।

5.1. भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध-

भारत की विदेश नीति में सबसे महत्वपूर्ण आयाम उसके पड़ोसी देशों के साथ संबंध हैं:-

- **पाकिस्तान**:- सीमा विवाद, आतंकवाद, और रणनीतिक संतुलन के मुद्दे।
- **चीन**:- सीमा पर तनाव, व्यापार और वैश्विक राजनीतिक दबाव।
- **नेपाल, भूटान और बांग्लादेश**:- आर्थिक सहयोग और सीमा मामलों में संतुलन।
- **म्यांमार और श्रीलंका**:- क्षेत्रीय सुरक्षा और समुद्री सहयोग।

इन संबंधों में अस्थिरता भारत की कूटनीतिक रणनीतियों और सुरक्षा नीतियों को प्रभावित करती है।

5.2. वैश्विक संगठनों में भारत की भागीदारी-

भारत विभिन्न अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय संगठनों में सक्रिय रूप से भाग लेता है:-

- **संयुक्त राष्ट्र (UN):**- शांति सुरक्षा और विकास के लिए सहयोग।
- **विश्व व्यापार संगठन (WTO):**- वैश्विक व्यापार और आर्थिक नीति।
- **BRICS और G20:**- रणनीतिक आर्थिक और राजनीतिक भागीदारी।
- **SAARC और BIMSTEC:**- क्षेत्रीय सहयोग और स्थिरता।

इन संगठनों में भारत की भूमिका उसे वैश्विक मंच पर एक जिम्मेदार और सक्रिय राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करती है।

6. ऊर्जा और सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ

भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के कारण **ऊर्जा सुरक्षा** एक गंभीर चुनौती बन गई है:-

- विदेशी तेल और गैस पर निर्भरता।
- नवीकरणीय ऊर्जा के स्रोतों का सीमित उपयोग।
- अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा बाजार में उतार-चढ़ाव।
- आतंकवाद और उग्रवाद।
- साइबर सुरक्षा और तकनीकी खतरे।
- सीमावर्ती क्षेत्रों में सैन्य संतुलन बनाए रखना।

7. रणनीतिक सहयोग और वैश्विक चुनौतियाँ

भारत अपनी कूटनीतिक रणनीति के माध्यम से वैश्विक चुनौतियों का सामना करता है:-

- **वैश्विक सुरक्षा सहयोग:**- सैन्य और तकनीकी साझेदारी।
- **व्यापार और आर्थिक सहयोग:**- मुक्त व्यापार समझौते और निवेश को बढ़ावा।
- **वैश्विक पर्यावरणीय समझौते:**- जलवायु परिवर्तन और सतत विकास में भागीदारी।
- **सांस्कृतिक और शैक्षणिक कूटनीति:**- विश्व स्तर पर भारत की पहचान मजबूत करना।

8. समाधान और सुझाव

भारत की 21वीं सदी की समस्याएँ बहुआयामी और जटिल हैं। पर्यावरणीय संकट, जलवायु परिवर्तन, राजनीतिक अस्थिरता और कूटनीतिक चुनौतियाँ मिलकर विकास की राह में बाधाएँ उत्पन्न कर रही हैं। अतः समाधान केवल सरकार या नीति निर्माताओं तक ही सीमित नहीं होने चाहिए, बल्कि इसमें समाज, नागरिक संस्थाएँ, उद्योग और अंतरराष्ट्रीय संगठन भी मिलकर सतत समाधान में योगदान दे सकते हैं:-

- स्कूल और कॉलेज स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा।
- नागरिकों में जलवायु और सतत विकास के प्रति जागरूकता।
- मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग।
- महिलाओं और वंचित वर्गों को निर्णय प्रक्रिया में शामिल करना।
- ग्रामीण और शहरी समुदायों के लिए समान अवसर।
- सामाजिक जागरूकता अभियानों के माध्यम से सहयोग बढ़ाना।
- पारदर्शी और जवाबदेह लोकतंत्र।
- भ्रष्टाचार नियंत्रण और नीति निर्माण में सुधार।
- चुनावी प्रक्रियाओं में निष्पक्षता और वित्तीय निगरानी।
- आंतरिक सुरक्षा और प्रशासनिक क्षमता का सुधार।
- पड़ोसी देशों के साथ स्थिर और संतुलित संबंध।
- वैश्विक संगठनों में सक्रिय भूमिका।
- अंतरराष्ट्रीय सहयोग और तकनीकी साझेदारी।
- ऊर्जा, सुरक्षा और पर्यावरणीय रणनीति में वैश्विक समन्वय।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी में निवेश।
- जलवायु और ऊर्जा नवाचार में शोध और विकास।
- डिजिटल प्लेटफॉर्म और स्मार्ट तकनीक का उपयोग।
- आपदा प्रबंधन और निगरानी प्रणाली का सुदृढ़ीकरण।

9. निष्कर्ष

अतः वर्तमान वैश्विक परिवृश्य में भारत की 21वीं सदी की समस्याएँ बहुआयामी और जटिल हैं। इसलिए पर्यावरणीय संकट, जलवायु परिवर्तन, राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक असमानताएँ और कूटनीतिक चुनौतियाँ सभी मिलकर देश के विकास और वैश्विक भूमिका को प्रभावित कर रही हैं। चूंकि भारत ने सरकारी सहयोग तथा अंतरराष्ट्रीय संगठनों के माध्यम से कई महत्वपूर्ण नीतियां बनाई हैं, परन्तु इनका प्रभावी क्रियान्वयन होना अत्यावश्यक है। भारत में लोकतंत्र की जटिलताएँ, भ्रष्टाचार और चुनावी दबाव विकास को प्रभावित कर रहे हैं। सामाजिक असमानताओं और प्रशासनिक क्षमता की कमी राजनीतिक स्थिरता पर असर डालती हैं। अतः प्रशासनिक सुधार और जनजागरूकता के माध्यम से राजनीतिक चुनौतियों का समाधान संभव है। भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध, ऊर्जा सुरक्षा और वैश्विक दबाव विदेश नीति को चुनौतीपूर्ण बनाते हैं, इसलिए वैश्विक संगठनों में सक्रिय भागीदारी और तकनीकी सहयोग भारत की कूटनीतिक स्थिरता के लिए आवश्यक है। इसी तरह हरित ऊर्जा, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और पर्यावरणीय शिक्षा का प्रबंधन भी अतिआवश्यक हैं। अन्ततः राजनीतिक सुधार, पारदर्शिता और सामाजिक समानता देश के लिए स्थिरता सुनिश्चित करेगी। इस तरह वैश्विक सहयोग, तकनीकी नवाचार

और सतत विकास नीति भारत को 21वीं सदी में स्थिर और प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण करने की दिशा में अग्रसर करेगी। इसलिए भारत को आने वाले वर्षों में सतत और समृद्ध राष्ट्र बनाने के लिए वैश्विक सहयोग पर ध्यान देना नितांत आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारत सरकार, पर्यावरण मंत्रालय. (2020). भारत में जलवायु परिवर्तन रिपोर्ट. नई दिल्ली: भारत सरकार।
2. शर्मा, आर. (2019). भारतीय राजनीति और वैश्विक परिप्रेक्ष्य. दिल्ली: महाविद्यालय प्रकाशन।
3. सिंह, के. (2018). पर्यावरणीय नीतियाँ और भारत. रोहतक: पीएनआरएस कॉलेज प्रकाशन।
4. भारत सरकार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग. (2020). सतत विकास रिपोर्ट. नई दिल्ली।
5. वर्मा, पी. (2017). वैश्विक जलवायु परिवर्तन और भारत. दिल्ली: पर्यावरण अध्ययन प्रकाशन।
6. भारत सरकार, पर्यावरण मंत्रालय. (2021). पर्यावरणीय स्थिति रिपोर्ट. नई दिल्ली: भारत सरकार।
7. वर्मा, पी. (2019). भारत में वायु और जल प्रदूषण. दिल्ली: पर्यावरण अध्ययन प्रकाशन।
8. कुमार, एस. (2020). जलवायु परिवर्तन और भारतीय कृषि. हरियाणा: ज्ञान केंद्र।
9. शर्मा, आर. (2018). सतत विकास और नीति निर्माण. दिल्ली: महाविद्यालय प्रकाशन।
10. भारत सरकार, जल संसाधन मंत्रालय. (2021). जल सुरक्षा और प्रबंधन रिपोर्ट. नई दिल्ली।
11. भारत सरकार, पर्यावरण मंत्रालय. (2020). जलवायु परिवर्तन और भारत. नई दिल्ली: भारत सरकार।
12. कुमार, एस. (2019). भारतीय कृषि और जलवायु संकट. हरियाणा: ज्ञान केंद्र।
13. शर्मा, आर. (2020). सतत विकास और जलवायु नीतियाँ. दिल्ली: महाविद्यालय प्रकाशन।
14. वर्मा, पी. (2018). ग्लोबल चार्मिंग और भारत. दिल्ली: पर्यावरण अध्ययन प्रकाशन।
15. भारत सरकार, ऊर्जा मंत्रालय. (2021). अक्षय ऊर्जा रिपोर्ट. नई दिल्ली।
16. शर्मा, आर. (2019). भारतीय राजनीति और वैश्विक परिप्रेक्ष्य. दिल्ली: महाविद्यालय प्रकाशन।
17. पटेल, एम. (2018). लोकतंत्र और शासन की चुनौतियाँ. अहमदाबाद: शिक्षा प्रकाशन।
18. भारत सरकार, संसदीय मामलों का मंत्रालय. (2020). भारतीय चुनाव और लोकतंत्र रिपोर्ट. नई दिल्ली।
19. सिंह, के. (2019). भ्रष्टाचार और नीति निर्माण. रोहतक: पीएनआरएस कॉलेज प्रकाशन।
20. वर्मा, पी. (2017). राजनीतिक स्थिरता और सामाजिक विकास. दिल्ली: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
21. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय. (2020). भारत की विदेश नीति. नई दिल्ली: भारत सरकार।
22. कुमार, एस. (2019). भारत और पड़ोसी देशों के संबंध. हरियाणा: ज्ञान केंद्र।
23. शर्मा, आर. (2018). वैश्विक राजनीति और भारत. दिल्ली: महाविद्यालय प्रकाशन।
24. वर्मा, पी. (2017). अंतरराष्ट्रीय संगठन और भारत. दिल्ली: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
25. पटेल, एम. (2019). ऊर्जा सुरक्षा और रणनीतिक सहयोग. अहमदाबाद: शिक्षा प्रकाशन।
26. भारत सरकार, पर्यावरण मंत्रालय. (2021). सतत विकास और नीति सुझाव. नई दिल्ली: भारत सरकार।
27. शर्मा, आर. (2020). हरित ऊर्जा और भारत. दिल्ली: महाविद्यालय प्रकाशन।

28. कुमार, एस. (2019). सामाजिक जागरूकता और नीति निर्माण. हरियाणा: ज्ञान केंद्र।
29. वर्मा, पी. (2018). तकनीकी नवाचार और सतत विकास. दिल्ली: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
30. पटेल, एम. (2019). प्रशासनिक सुधार और राजनीतिक स्थिरता. अहमदाबाद: शिक्षा प्रकाशन।
31. भारत सरकार. (2021). भारत की राष्ट्रीय नीति और सतत विकास. नई दिल्ली: भारत सरकार।
32. शर्मा, आर. (2020). 21वीं सदी की राजनीतिक और पर्यावरणीय चुनौतियाँ. दिल्ली: महाविद्यालय प्रकाशन।
33. कुमार, एस. (2019). जनवायु परिवर्तन और भारत की वैधिक भूमिका. हरियाणा: ज्ञान केंद्र।
34. वर्मा, पी. (2018). भारतीय प्रशासन और सामाजिक सुधार. दिल्ली: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
35. पटेल, एम. (2019). भारत की विदेश नीति और कूटनीतिक चुनौतियाँ. अहमदाबाद: शिक्षा प्रकाशन।

... Cite this article ...

Dr. Kashmir Singh & Dr. Rajni Kumari. (2025). 21वीं सदी की प्रमुख वैधिक समस्याएँ तथा भारतीय दृष्टिकोण: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. SK INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH HUB, 12(9), 71–80.

<https://doi.org/10.61165/sk.publisher.v12i9.7>